श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

'पुष्पेन्दु'

हे पार्श्वनाथ ! हे अश्वसेन सुत, करुणा सागर तीर्थंकर।
हे सिद्धशिला के अधिनायक, हे ज्ञान उजागर तीर्थंकर।।
हमने भावुकता में भरकर, तुमको हे नाथ पुकारा हैं।
प्रभुवर ! गाथा की गंगा से, तुमने कितने को तारा हैं।।
हम द्वार तुम्हारे आये हैं, करुणा कर नेक निहारो तो।।
मेरे उर के सिंहासन पर, पग धारो नाथ ! पधारो तो।।

पीले चावल/लौंग क्षेपण करना

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।।

झारी से जल

मैं लाया निर्मल जल धारा, मेरा अन्तर निर्मल कर दो,
मेरे अन्तर को हे भगवन, शुचि सरल भावना से भर दो।।
मेरे इस आकुल अन्तर को, दो शीतल सुखमय शान्ति प्रभो,
अपनी पावन अनुकम्पा से, हर लो मेरी भव-भ्रान्ति प्रभो।।१।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान, निर्वाण
पंचकल्याणक सहिताय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन जल

प्रभु पास तुम्हारे आया हूँ, भव सन्ताप सताया हूँ,
तब पद चन्दन के हेतु प्रभो, मलयागिरी चन्दन लाया हूँ।
अपने पुनीत चरणाम्बुज की, हमको कुछ रेणु प्रदान करो,
हे संकट मोचन तीर्थंकर, मेरे मन के सन्ताप हरो।।२।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान, निर्वाण
पंचकल्याणक सहिताय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

सफेद चावल

प्रभुवर क्षण भंगुर वैभव को, तुमने क्षण में ठुकराया है,
निज तेज तपस्या से तुमने, अभिनव अक्षय पद पाया हैं।
अक्षय हों मेरे भक्ति भाव, प्रभु पद की अक्षय प्रीति मिले,

अक्षय प्रतीति रवि किरणों से, प्रभु मेरा मानस कुंज खिले।।३।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक सहिताय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पीले चावल

यद्यपि शतदल की सुषमा से, मानस-सर शोभा पाता हैं,
पर उसके रस में फंस मधुकर, अपने प्रिय प्राण गँवाता हैं।
हे नाथ आपके पद-पंकज, भव सागर पार लगाते हैं,
इस हेतु तुम्हारे चरणों में, श्रद्धा के सुमन चढ़ाते हैं।।४।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक सहिताय काम बाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सफेद चिटकी

व्यंजन के विविध समूह प्रभो तन की कुछ क्षुधा मिटाते हैं,
चेतन की क्षुधा मिटाने में, प्रभु ! ये असफल रह जाते हैं।
इनके आस्वादन से प्रभुवर मैं संतुष्ट नहीं हो पाया हूँ,
इस हेतु आपके चरणों में, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक सहिताय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीली चिटकी

प्रभु दीपक की मालाओं से, जग अन्धकार मिट जाता है,
पर अन्तर्मन का अन्धकार, इनसे न दूर हो पाता हैं।
यह दीप सजाकर लाए हैं, इनमें प्रभु दिव्य प्रकाश भरो,
मेरे मानस-पट पर छाए, अज्ञान तिमिर का नाश करो।।६।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक सहिताय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

यह धूप सुगन्धित द्रव्यमयी, नभमण्डल को महकाती हैं,
पर जीवन-अघ की ज्वाला में, ईंधन बनकर जल जाती हैं।
प्रभुवर इसमें वह तेज भरो, जो अघ को ईंधन कर डाले,
हे वीर विजेता कर्मों के, हे मुक्ति-रमा वरने वाले।।७।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक सहिताय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

यो तो ऋतुपति ऋतु में ही, फल से उपवन भर जाता हैं।
पर अल्प अवधि का ही झोंका, उनको निष्फल कर जाता हैं।
दो सरस भक्ति का फल प्रभुवर, जीवन-तरु तभी सफल होगा।
सहजानन्द सुख से भरा हुआ, इस जीवन का प्रतिफल होगा।।८।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान, निर्वाण पंचकल्याणक सहिताय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

पथ की प्रत्येक विषमता को, मैं समता से स्वीकार करूं।
जीवन विकास के प्रिय पथ की, बाधाओं का परिहार करूं।
मैं अष्ट कर्म आवरणों का, प्रभुवर आतंक हटाने को,
वसु द्रव्य संजोकर लाया हूँ, चरणों में नाथ चढ़ाने को।।९।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ गर्भ, जन्म, तप, केवल ज्ञान, निर्वाण जिनेन्द्राय पंचकल्याणक सहिताय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

वामादेवी के गर्भ में, आये दीनानाथ।
चिर अनाथ जगती हुई सजग, समोद, सनाथ।
अज्ञानमय इस लोक में आलोक सा छाने लगा,
होगर मुदित सुरपति नगर में, रत्न बरसाने लगा।
गर्भस्थ बालक की प्रभा प्रतिभा, प्रकट होने लगी,
नभ से निशा की कालिमा अभिनव उषा धोने लगी।।१।।

ॐ ह्रीं बैसाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भ मंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वार द्वार पर सज उठे, तोरण वन्दनवार।
काशी नगरी में हुआ, पार्श्व प्रभु अवतार।
प्राची दिशा के अंग में नूतन दिवाकर आ गया,
भविजन जलज विकसित हुए जग में उजाला छा गया।
भगवान के अभिषेक को जल क्षीर सागर ने दिया,

इन्द्रादि ने हैं मेरु पर अभिषेक जिनवर का किया।।२।।

ॐ ह्रीं पौष कृष्णैकादश्यां जन्म मंगल प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निरख अथिर संसार को, गृह कुटुम्ब सब त्याग।
वन में जा दीक्षा धरी, धारण किया विराग।।
निज आत्मसुख के श्रोत में तन्मय प्रभु रहने लगे,
उपसर्ग और परीषहों को शान्ति से सहने लगे।
प्रभु की विहार वनस्थली तप से पुनीता हो गई,
कपटी कमठ शठ की कुटिलता भी विनीता हो गई।।३।।

ॐ ह्रीं पोष कृष्णेकादश्यां तपो मंगल मंडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मज्योति से हट गये, तम के पटल महान।
प्रकट प्रभाकर सा हुआ, निर्मल केवल ज्ञान।।
देवेन्द्र द्वारा विश्वहित सम अनुसरण निर्मित हुआ,
सम भाव से सबको शरण का पंथ निर्देशित हुआ।
था शान्ति का वातावरण उसमें न विकृत विकल्प थे,
माना सभी तब आत्महित के हेतु कृत-संकल्प थे।।४।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा चतुर्थी दिने केवल ज्ञान प्राप्ताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

युग युग के भव भ्रमण से देकर जग को त्राण।
तीर्थंकर श्री पार्श्व ने, पाया पद-निर्वाण।।
निर्लिप्त आज नितान्त हैं चैतन्य कर्म अभाव से,
हैं ध्यान, ध्याता, ध्येय का किंचित न भेद स्वभाव से।
तव पाद पदमों की प्रभु सेवा सतत पाते रहे,
अक्षय असीमानन्द का अनुराग अपनाते रहे।।५।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला सप्त म्यां मोक्ष मंगलमडिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।